

आयुर्वेद पाण्डुलिपि के सन्दर्भ में एक अध्ययन

डॉ. कृष्ण मुरारी जैमिन

पद-अध्येता, अंतिम वर्ष

विभाग-संहिता एवं मौलिक सिद्धांत

संस्थान-राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान जयपुर

प्रस्तावना (Introduction)

भारतीय चिकित्सा परम्परा में आयुर्वेद को वेदांग के समान महत्व प्राप्त है। इसकी निरंतरता का एक प्रमुख आधार प्राचीन काल से उपलब्ध पाण्डुलिपियाँ (Manuscripts) हैं। ये पाण्डुलिपियाँ ताड़पत्र, भोजपत्र, हस्तलिखित ग्रंथों तथा ललित कला से सुसज्जित पन्नों पर लिखी गई हैं। आयुर्वेद पाण्डुलिपियाँ केवल रोगोपचार का ज्ञान ही नहीं देतीं, बल्कि उस काल की चिकित्सा पद्धति, सामाजिक संरचना, आहार-विहार और सांस्कृतिक परिवेश का भी परिचय कराती हैं।

वर्तमान युग में इन पाण्डुलिपियों का अध्ययन एवं संरक्षण आवश्यक है क्योंकि इनमें छिपा ज्ञान आज भी अनुसंधान, औषध-निर्माण एवं रोग-निदान में उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

सामग्री एवं विधि (Material and Methodology)

- साहित्यिक स्रोत:** चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, अष्टांग हृदय, भैषज्य रत्नावली इत्यादि की पाण्डुलिपियों का अवलोकन।
- पाण्डुलिपि संरक्षण स्थल:** राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान (जयपुर), तथा भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट जैसे संस्थानों से संग्रहीत जानकारी।
- अनुसंधान पद्धति:**
 - एतिहासिक-विश्लेषणात्मक (Historical-Analytical Method)।
 - तुलनात्मक अध्ययन (Comparative Study) द्वारा विभिन्न पाण्डुलिपियों में उल्लिखित भेदों का परीक्षण।
 - आधुनिक अनुसंधान दृष्टिकोण से उपलब्ध जानकारी का वैज्ञानिक विश्लेषण।

परिणाम एवं चर्चा (Results and Discussion)

- संरक्षण की स्थिति: अनेक पाण्डुलिपियाँ नमी, कीट या अपूर्णता के कारण क्षतिग्रस्त हो चुकी हैं।
- भाषिक विविधता: पाण्डुलिपियाँ संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, फारसी और क्षेत्रीय भाषाओं में भी उपलब्ध हैं।

विषयवस्तु:

- | | |
|--|--------------------------------|
| • औषधि विज्ञान (Dravyaguna) | रोग विज्ञान (Nidana, Chikitsa) |
| • शल्य-शालाक्य विज्ञान (Surgery & ENT) | आहार-विहार विज्ञान |

महत्व:

- औषधियों के स्थानीय नामों और प्रयोग-विधि का संरक्षण।
- अज्ञात या लुप्त औषधियों की जानकारी।
- ऐतिहासिक चिकित्सा ज्ञान का पुनःअन्वेषण।

आधुनिक संदर्भ: डिजिटलाइजेशन, ई-पाण्डुलिपि परियोजनाएँ तथा वैज्ञानिक अनुवाद की दिशा में कार्य प्रगति पर है।

निष्कर्ष (Conclusion)

आयुर्वेद पाण्डुलिपियाँ भारत की अमूल्य धरोहर हैं, जो न केवल चिकित्सीय ज्ञान का भंडार हैं बल्कि भारतीय संस्कृति, समाज और चिकित्सा-परम्परा का दर्पण भी प्रस्तुत करती हैं। इनका संरक्षण, संपादन और आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि से पुनर्विश्लेषण आवश्यक है ताकि प्राचीन चिकित्सा ज्ञान वर्तमान चिकित्सा प्रणाली को भी समृद्ध कर सके।

संदर्भ (References)

1. आचार्य चरक, चरक संहिता, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।
2. आचार्य सुश्रुत, सुश्रुत संहिता, चौखम्भा ओरिएण्टलिया, वाराणसी।
3. आचार्य वाग्भट, अष्टांग हृदय, चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी।
4. Dash, Vaidya B., Ayurvedic Manuscripts in India, CCRAS Publication, New Delhi.
5. Sharma, Priya Vrat, History of Medicine in India, B.H.U. Press, Varanasi.